तृतीयः पाठः

बन्धुत्वस्य सन्देष्टा रविदासः

[कहा जाता है कि परमोपासक रामानन्द के बारह शिष्यों में रविदास नाम के एक शिष्य थे, जो संसार में 'रैदास' के नाम से प्रसिद्ध हुए। इनका जन्म वाराणसी के मडुवाडीह ग्राम में विक्रम संवत् १४७१ में माघमास की पूर्णिमा के दिन हुआ था। रविवार के दिन जन्म होने के कारण इन्हें रविदास नाम दिया गया। पन्द्रहवीं शताब्दी में भारतीय जीवन अत्यन्त कष्टपूर्ण व कठिनता से भरा हुआ था। मुस्लिम शासकों के आक्रमण और मिथ्या कलह से भारतीय राजागण दुःख और दीनता से ग्रसित थे। सभी ओर से उपेक्षित भारतीय जनता, विभिन्न धर्मानुयायियों में प्रचलित विद्वेष, जाति और वर्ण के भेद से विभक्त भारतीय समाज की दुर्दशा को देखकर दुःखित हृदयवाले सन्त व महात्मा ईश्वर की शरण को ही एकमात्र उपाय मान रहे थे। वे लोग ईश्वर के प्रति समर्पण, परमात्मा की सर्वशक्तिमत्ता और व्यापकता का प्रचार-प्रसार कर रहे थे। ऐसे समय में सन्त रविदास ने धर्म के बाह्य आचरण को ही परस्पर वैर का कारण बताते हुए भाईचारे का सन्देश दिया। उन्होंने तन की शुद्धि की अपेक्षा मन की शुद्धि को आवश्यक माना। उनका कहना था कि यदि मन पवित्र हो तो सामने काठ की थाली में रखा साधारण जल भी गंगा जल के समान होता है। सन्त रविदास ने पाठशाला में शिक्षा प्राप्त नहीं की थी तथापि गुरु की कृपा से संसार की नश्वरता और परमात्मा की अनश्वरता व व्यापकता का ज्ञान प्राप्त किया। गुरु की प्रेरणा से यही सन्देश जन-जन को दिया। उनका विश्वास था कि फल की इच्छा किये बिना अपने कर्म को करते हुए घर में भी परमात्मा से साक्षात्कार किया जा सकता है। तपस्या के लिए गहन वन या कन्दराओं में जाने की आवश्यकता नहीं। कबीर और नानक की भाँति रविदास भी निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे, परन्तु सगुण भक्ति के प्रति किसी प्रकार का वैरभाव न था। उनकी दृष्टि में परमात्मा ने सबको समान बनाया है। अतः इन्होंने छुआछूत, ऊँच-नीच का विरोध किया। उन्होंने दीन-दलितों और निर्धनों की सेवा में ही ईश्वर के दर्शन किये। देश की अखण्डता और राष्ट्रीय एकता की रक्षा करते हुए सन्त रविदास ने विक्रम संवत् १५९७ में राजस्थान के चित्तौड़गढ़ नामक स्थान पर १२६ वर्ष की आयु में देह-त्याग किया। परन्तु उनका यशरूपी शरीर आज तक जीवित है।]

परमोपासकस्य रामानन्दस्य द्वादशशिष्या आसन्निति भण्यते। तेषु शिष्येषु रविदासो लोके रैदास इति संज्ञया ख्यात एकः शिष्यः आसीदित्युच्यते। रविदासस्य जन्म काश्यां माण्डुरनाम्नि (मडुवाडीह) ग्रामे एकसप्तत्युत्तरचतुर्दशशततमे (१४७१ वि०) विक्रमाब्दे माघमासस्य पूर्णिमायान्तिथौ रविवासरेऽभवत्। रविवासरे तस्य जन्म इति हेतोः रविदास इति नाम जातमित्यनुमीयते।

पञ्चदश्यां शताब्दौ भारतीयजनजीवनमतीवक्लेशक्लिष्टमासीत्। यवनशासकैराक्रान्तो देशो, मिथः कलहायमानां भारतीयाः राजानः दुःखदैन्यग्रस्ताः, सर्वथोपेक्षिताः भारतीयजनाः विविधधर्मानुयायिषु प्रवृत्तो विद्वेषः जातिवर्णेषु विभक्तो भारतीयसमाज इति देशदशां दर्शं दर्शं दूयमानहृदयाः तदानीन्तनाः महात्मानः सन्तश्चेश्वरमेव शरणमिति मन्यमाना ईश्वरम्प्रति समर्पिताः सन्तः परमात्मनो व्यापकत्वं तस्य सर्वशक्तिमत्वञ्च बोधयन्ति स्म।

वस्तुतस्तु, तादृशा एव महापुरुषाः 'सन्त' शब्देन भारतीयजनमानसे समादृता अभवन्। ये परदुःखकातराः परहितरताः दुःखिजनसेवापरायणाः दलितान् शोषितान्प्रति सदयाः स्वसुखमविगणयन्तः यदृच्छालाभसन्तुष्टा आसन्।

सत्पुरुषो महात्मा रविदासः स्वकर्मणि निरतः सन् परमात्मनो माहात्म्यमुपवर्णयन् दुःखितान् जनान्प्रति सदयहृदयः कर्मणः प्रतिष्ठां लोकेऽस्थापयत्। धर्मस्य बाह्याचारः एव परस्परवैरस्य हेतुरिति सः विश्वसिति स्म। अतो बाह्याचारान् परिहाय धर्माचरणं

विधेयम्। गङ्गास्नानाच्छरीरशुद्धेरपेक्षया मनसः शुद्धिरावश्यकीति तेनोक्तम्। पूते तु मनसि काष्ठस्थाल्यामेव गङ्गेति तस्योक्तिः प्रसिद्धैवास्ति।

रविदासः कस्याञ्चिदपि पाठशालायां पठितुं न गतोऽतस्तस्य ज्ञानं पुस्तकीयं नासीत्। जगतो नश्वरत्वं परमात्मनोऽनश्वरत्वं व्यापकत्वमित्यादिदार्शनिकं ज्ञानं गुरोरनुकम्पया तेन लब्धं प्रेरणयैव तथाभूतस्य ज्ञानस्योपदेशो जनेभ्यस्तेन दत्तः।

सः तपस्तप्तुं गहनं वनं न जगाम न वा गिरिगुहायामुपविश्य साधनरतः ज्ञानमधिगन्तुं चेष्टते स्म। वीतरागभयक्रोधोऽसौ जगति निवसन्नपि जगतः बन्धनात् पद्मपत्रमिव मुक्तः व्यवहरति स्म। स्वकर्मणि निरतः फलम्प्रति निराकाङ्क्षः स्वगृहेऽपि परमात्मानं साक्षात्कर्तुं शक्यत इति रविदासः प्रत्येति। अतो विभिन्नोपासनास्थलेषु वनेषु रहसि वा ईश्वरानुसन्धानादपेक्षया स्वहृदये एवानुसन्धातुमुचितम्। ईश्वरप्राप्तावहङ्कार एव बाधकोऽस्ति। 'अहमिदं करोमि' ममेदमिति बोधः भ्रमात्मकः। भ्रममपहायैव ईश्वरप्राप्तिः सम्भवा। रविदासः स्वरचिते पद्ये गायति–यदा अहमस्मि तदा त्वं नासि, यदा त्वमसि तदा अहं नास्मि।

रविदासः कबीरदासो नानकदेवप्रभृतयः सन्तो महात्मानः निर्गुणमेवेश्वरं गायन्ति स्म। परन्ते सगुणसम्प्रदायावलम्बिनः प्रति विद्वेषिणो नासन्। तैः रचितेषु पदेषु यत्र-तत्र भक्तिभावस्य तत्त्वमवलोक्यते।

निराकारब्रह्मणः गहनभूते सुविस्तृते साक्षात्कारविचारनभसि विचरन्नपि रविदासः पृथ्वीतले विद्यमानेषु दुःखितेषु, दरिद्रेषु दलितेषु च सुतरां रमते स्म। स दलितेषु, दीनेषु, दरिद्रेष्वेवेश्वरमपश्यत्। तेषां सेवा, तान्प्रति सहानुभूतिः प्रेमप्रदर्शनं चेश्वरार्चनमिति तस्य विचारः। सामाजिकवैषम्यं न वास्तविकं प्रत्युत परमात्मना सर्वे समाना एव रचिताः, सर्वे च तस्येश्वरस्य सन्ततयोऽतः परस्परं बान्धवाः। मनुष्येषु तर्हि मिथः कथं वैरभावः ? इत्थं समत्वस्य बन्धुतायाश्चोपदेशं जनेभ्योऽददात्। जातिवर्णसम्प्रदायादिभेदा अपि मनुष्यरचिता परमात्मन इच्छाप्रतिकूलम्। इत्थं रविदासेन मनुष्यजातौ स्पृश्यास्पृश्यादिदोषाणामुच्चावचभेदानां चातीवतीव्रस्वरेण विरोधः कृतः। हरिं भजति स हरेर्भवति। हरिभजने न कश्चित्पृच्छति जातिं वर्णं वेति सत्यं प्रतिपादयन् देशस्याखण्डतायाः राष्ट्रस्यैक्यस्य च रक्षणे स प्रयातत्। महात्मा रविदासोऽध्यात्म, भक्तिं, सामाजिकाभ्युन्नतिं युगपदेव संसाधयन् सप्तनवत्युत्तरपञ्चदशशततमेविक्रमे राजस्थानप्रान्ते चित्तौड़गढनाम्नि स्थाने षड्विंशत्युत्तरशतमिते वयसि परमात्मनि विलीनः यशःशरीरेणाद्यापि जीवतितराम्।

काठिन्य निवारण

परमोपासकस्य = महान् उपासक। **भण्यते** = कहा जाता है। **संज्ञया** = नाम से। **ख्यातः** = प्रसिद्ध। **इत्यनुमीयते** = ऐसा अनुमान लगाया जाता है। **रविवासरे जातः** = रविवार को पैदा होने के कारण। **दूयमान** = दुःखी। **तादृशा** = वैसे ही। **समादृता** = सम्मानित। **परिहाय** = छोड़कर। **पूते** = पवित्र। **काष्ठस्थाल्यामेव** = कठौती में ही। **नश्वरत्वं** = नाशवान्। **लब्धं** = प्राप्त किया। **गहन** = घने। **गुहायाम्** = गुफा में। **प्रत्येति** = विश्वास करते थे। **विद्वेषिण** = शत्रु। **तान्प्रति** = उनके लिए। **युगपदेव** = एक साथ ही। **वयसि** = आयु में। **इत्थं** = इस प्रकार। **दर्शं दर्शं** = देख-देखकर। **निरतः** = जुटे रहना। **सुतरां** = अत्यन्त। **नासि** = नहीं हो। **अपहाय** = दूर करके। **निराकाङ्क्षः** = इच्छारहित। **रहसि** = एकान्त में। **उच्चावचभेदानाम्** = ऊँच-नीच के भेदों का।

अभ्यास-प्रश्न

१. निम्नलिखित अवतरणों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(क) यवनशासकैः .....बोधयन्ति स्म।

(ख) रविदासः .....रमते स्म।

(ग) हरिभजने .....जीवतितराम्।

२. प्रस्तुत पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

३. किसने कहा था कि काठ की थाली का साधारण जल गङ्गा-जल के समान होता है?

४. रविदास किसके शिष्य थे?

५. रविदास का जन्म किस दिन हुआ था?

६. रविदास के जन्म के समय भारत में किसका शासन था?

७. रविदास की मृत्यु कहाँ हुई?

८. रविदास किस ब्रह्म के उपासक थे?

९. निम्नांकित शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए–

परमोपासकस्य, सर्वथोपेक्षिताः, महात्मनः, देशस्याखण्डतायाः, आसीदित्युच्यते।

१०. निम्नलिखित शब्दों की सहायता से संस्कृत में वाक्य बनाइए–

तेषु, लोके, नासीत्, वनेषु, यदा, करोमि।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

१. रामानन्द के मुख्य शिष्यों के नाम बताइए।

२. रविदास जी का मानना था कि 'मन चंगा तो कठौती में गंगा'। इस विषय पर आप अपना मत प्रस्तुत कीजिए।

●●●